International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 83-84

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 83-84
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-09-2018
Accepted: 19-10-2018

डॉ. भावना आचार्य
सह–आचार्य संस्कृत, ''शान्ताकारम् शिव कॉलोनी, नोखा रोड़, हिरण मगरी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. भावना आचार्य
सह–आचार्य संस्कृत, ''शान्ताकारम् शिव कॉलोनी, नोखा रोड़, हिरण मगरी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

गावो विश्वस्य मातर

डॉ. भावना आचार्य

प्रस्तावना

भारत एक धर्मपरायण आध्यात्मिक देश है, जहाँ मानव के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त समस्त क्रिया–कलापों के मूल में कल्याण–प्राप्ति की अभिलाषा निहित रहती है, साथ ही यहाँ के जनमानस का विश्वास है कि प्रत्येक वर्ण और समुदाय के नर–नारियों को धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय को सहज ही प्राप्त करा देने वाली होने से गो–सेवा की महत्ता सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि है। भारतीय धर्मशास्त्रों के पन्ने–पन्ने पर पूजा–उपासना, त्याग–तपस्या, तीर्थ–दर्शन, गंगा–स्नान आदि करने–कराने का माहात्म्य उल्लिखित है और यह भी वर्णित है कि उक्त समस्त कल्याणमूलक क्रियाकलापों के अनुष्ठान से जो–जो पुण्य प्राप्त होता है, वह सब पुण्य केवल गो–सेवा करने से सहज ही उपलब्ध हो जाता है

क्योंकि – सदा गावः शुचयो विश्वधायसः[1]
– गौएँ सदा पवित्र और सबका कल्याण करने वाली होती हैं।

गाय भारतीय धर्म और संस्कृति–सभ्यता की प्रतीक रही है। जिस प्रकार सरिताओं में गंगा को, देवों में विष्णु को, देवियों में दुर्गा को और मानवता में जननी को उत्कृष्ट माना गया है, उसी प्रकार पशु–परंपरा में गाय को उत्कृष्ट स्थान दिया गया है। कहा भी गया है – 'गावो विश्वस्य मातरः'' अर्थात गाय चराचर जगत् की माता है यानि अखिल विश्व का आधार है, हमारी संस्कृति का प्राण है। गाय और पृथ्वी एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि पृथ्वी जीवों का आधार है और गौ जीवों का जीवनाधार है। गौ का यौगिक अर्थ गतिशील है – गच्छति इति गौः अर्थात् जो चलती है, गतिशील है वह गौ है। गाय, गंगा, गीता और गायत्री – ये चारों भारतीय संस्कृति के चार सुदृढ़ स्तंभ है। गो–दुग्ध अमृत है, गंगाजल पवित्र एवं तारक है, गीता निष्काम कर्म का उपदेश देती है और गायत्री मंत्र हमारी बुद्धि को पवित्र एवं परिष्कृत करता है, विवेक को पुष्ट करता है। इनको सबल रूप में पाकर ही हमारी यह उदार एवं उदात्त आर्य संस्कृतिक विश्व में अपना विशिष्ट एवं श्रेष्ठ स्थान बनाए हुए है।

भारतीय संस्कृति की प्रतीकस्वरूपा गाय की महिमा वेदों से लेकर समस्त धार्मिक ग्रंथों में गाई गई हैं और प्राचीन ऋषि, आचार्य, विद्वानों से लेकर आधुनिक विद्वानों तक सभी की सम्मति में गाय का स्थान सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य हैं। वेदों में इसे ''अघ्न्या'' कहा गया है अर्थात् जो न तो स्वयं किसी को कष्ट पहुँचाती है और न जो अन्य किसी के द्वारा कभी मारने–पीटने या क्लेश पहुँचाये जाने योग्य है, अर्थात् पूज्या, वन्द्या और श्रद्धेया है। अथर्ववेद में तो गाय की महिमा दर्शाने वाला पूरा ''गो सूक्त'' ही है। महाभारत[2] के अनुशासन पर्व में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को गौ–माहात्म्य सुनाते हुए कहते हैं – मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदा अर्थात् गौ सभी सुखों को देने वाली है और सभी प्राणियों की माता है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण में कहा गया है कि गाय की श्वास–वायु से घर पवित्र होता है और गाय के स्पर्श से पाप दूर होते हैं। ऋग्वेद[3] के अनुसार जिस स्थान पर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँ की रज तक पवित्र हो जाती है और वह स्थान तीर्थ बन जाता है।

कामधेनु, अर्च्या, सुरभी आदि कही जाने वाली गौओं के सम्मान की गाथाएँ भी हमारे इतिहास में भरी पड़ी है। इक्ष्वाकुवंशी सम्राट दिलीप ने गौ की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में संकोच नही किया, फलस्वरूप उन्हें पुत्र–प्राप्ति का वरदान मिला और चक्रवर्ती पुत्र रघु के कारण ही सूर्यवंश ''रघुवंश'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गो–सेवा करके ही गौतम न्यायशास्त्र के प्रवर्तक बने, महर्षि जमदग्नि को परशुराम जैसे तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति हुई, महर्षि वशिष्ठ को अष्टसिद्धियों की उपलब्धि सुलभ हुई। छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि भी महान् गोभक्त थे।

धर्मग्लानि को दूर कर धर्मसंस्थापन के उद्देश्य से अवतरित भगवान श्री कृष्ण को तो गायों की सेवा करने के कारण ''गोपाल'' कहा गया है। उनकी बाललीलाओं का क्रीड़ास्थल गोकुल और परमधाम गोलोक कहा गया है। ऋग्वेद के विष्णुसूक्त[4] में विष्णुलोक – वर्णन की एक मंत्र – पंक्ति है – 'यत्र गावो भूरिश्रृंगा अयासः' अर्थात् लम्बे सींगो वाली गायें रहती है। व्रजमंडल में धेनु चराने वाले नंदलाल श्रीकृष्ण कन्हैया की एकमात्र आकांक्षा यही है – 'गावों मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।'

शास्त्रों के अनुसार हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवता माने गए हैं। संपूर्ण विश्व चराचर जगत् के जड़–चेतन सभी अवयवों के अधिष्ठातृ देवता होते हैं और इन सभी देवी–देवताओं का निवास गौ में होने के कारण गौ विश्वरूप है। यही कारण है कि केवल गौ की पूजा एवं सेवा से सम्पूर्ण देवी–देवताओं का आराधन हो जाता है। तीर्थस्थानों में जाने से, ब्राह्मणों को भोजन कराने से और महादान देने से जो पुण्य प्राप्त होता है – ये सभी पुण्य गायों को तृण खिलाने भर से तत्क्षण ही मिल जाते हैं। इतना ही नहीं, गो–दर्शन, गो–स्पर्श तथा गो–स्मरण मात्र से ही मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जात हैं।

अपनी जननी तो माँ के रूप में केवल शैशव में ही स्तन–पान द्वारा पोषण करती है किन्तु मृत्युपर्यन्त हमारा पोषण करने वाली सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी गाय अमृततुल्य दुग्ध पेय देने के अतिरिक्त अपनी पवित्रता, शालीनता में भी पूजनीय रही है। अपने दूध, दही, घी से बनने वाले उत्तम एवं श्रेष्ठ भोज्य पदार्थो के रूप में पूरे राष्ट्र को शक्ति, ऊर्जा तथा जीवनी–शक्ति प्रदान करती है। विज्ञान के प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि गोदुग्ध के समस्त तत्त्व मानव माँ के दुग्ध के समान ही पुष्टिकारक होते है।

धर्म और संस्कृति की प्रतीक होने के साथ–साथ हमारी ऋषि–संस्कृति और कृषि–संस्कृति दोनों की आधार शिला गाय ही रही है। ऋषियों के आश्रम में गायों की सेवा होती थी। कृषि में भी गोमूत्र तथा गोबर की खाद खेतों को उपजाऊ करने में व खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाने तथा जमीन की उर्वराशक्ति को बनाए रखने में अत्यन्त उपयोगी है। पर्यावरण–संरक्षण की दृष्टि से गाय का कोई विकल्प नहीं है क्योंकि अपने श्वास–प्रश्वास के द्वारा अनगिनत कीटाणुओं से भी क्षेत्र को शुद्ध करने में गाय उपयोगी है और अनेक संक्रामक रोग गायों द्वारा स्पर्श की हुई वायु के लगने से अनायास ही नष्ट हो जाते है। गौ के खुर से उड़ने वाली धूल भी अत्यन्त पवित्र होती है – तस्या खुरन्यास पवित्रपासुम् मार्गम्[5] । श्रीकृष्ण गाय चराकर संध्या–समय जब घर लौटते हैं तो गोरज से अलंकृत उनके मुख की अलौकिक शोभा देखने योग्य होती है – ऐसा वर्णन भागवतकार ने किया है।

इनके साथ ही साथ हमारे धार्मिक शुभ कार्यो में पंचगव्य और पंचामृत का विधान अनादिकाल से प्रचलित व मान्य है। पंचगव्य में गोदुग्ध, गोघृत, दधि, गोमूत्र एवं गोबर सम्मिलित होता है, जो परमपावन, आरोग्यप्रद, आयुवर्धक और बलवर्धक माने जाते हैं। ये पदार्थ आयुर्वेद की दृष्टि से तथा शास्त्रीय दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। पंचगव्य का सेवन करने से त्वचा से अस्थि पर्यन्त शारीरिक धातुओं के रोग तथा विषाणुओं का विनाश होकर नवीन जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। यह एक परम पवित्र रसायन है, पथ्य है, रक्त के समस्त विकारों को दूर करने वाला, कफ, वात और पित्तजन्य दोषों को दूर करने वाला है। गोदुग्ध एवं गोघृत का सेवन शरीर के लिए न केवल रसायनवत् बलकारक एवं पुष्टि–प्रदायक है बल्कि मानव को विशुद्ध बुद्धि एवं मेधा से संयुक्त कर प्रज्ञावान् बना देता है। गोमूत्र में कितने ही छोटे–बड़े रोगों को दूर करने की शक्ति है, इसके यथाविधि सेवन से सभी प्रकार के उदररोग, नेत्र–रोग, कर्णरोग आदि को मिटाया जा सकता है। गोबर रोगाणुनाशक व शुचिता देने वाला है। विषैले कीटों को तत्क्षण ही नष्ट करने की क्षमता के कारण गाँवों में आज भी घर–द्वार की लिपाई का कार्य भी गोबर से किया जाता है क्योंकि गोबर परमाणु–विस्फोट जनित विकिरण का भी प्रबल प्रतिरोधक होता है। बिना किसी भेदभाव के सबका भरण–पोषण करने वाली गाय का रक्षण, पालन और संवर्धन हमारे भारतवर्ष के लिए नया नहीं है, बल्कि यह हमारा सनातन धर्म है। इस अमूल्य स्वर्गीय ज्योति का अवतरण मनुष्यों के कल्याणार्थ आशीर्वाद रूप में पृथ्वीलोक में हुआ है। गौ की प्रकृति, उसके द्वारा प्राप्त नैसर्गिक एवं स्वाभाविक स्वावलम्बन तथा उसके सौम्यतादि गुणों की खान होने के कारण ही भारतीय समाज व संस्कृति में गौ का इतना महत्त्व है। महात्मा गांधी ने कहा था – ''मैं गाय को सम्पन्नता और सौभाग्य की जननी मानता हूँ। गोधन हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है और इसकी सुरक्षा व संवर्धन हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।'' हमारी सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र और भारतीय संस्कृति में पावन समृद्धि की आधारशिला गाय के लिए महाभारत में कहा गया है – 'गोधनं राष्ट्रवर्धनम्'' क्योंकि राष्ट्र का वैभव–वर्धन तो गोधन के विकास व उसकी रक्षा से ही जुड़ा हुआ है। गाय की धार्मिक महिमा जो वेदों और प्राचीन ग्रंथों में है, केवल उसी का गुणगान करने से हम अपने कर्तव्य का निर्वाह नही कर सकेंगे बल्कि गायों के संवर्धन और संरक्षण आदि के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि हम स्वयं गौ के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए जागरूक बनें और गोरक्षा, गो–संवर्धन आदि पर आधारित अर्थनीति को अपनाकर देश का विकास तथा पर्यावरण–संरक्षण के दायित्व का निर्वहन करें।

संदर्भ सूची

1. सामवेद 5/6/6
2. 69/7
3. 1/154/6
4. 1/154/6
5. रघुवंश 21